सुरः अल-अनकबूत

इक्कीसवां पारः उत्लु मा ऊहि-य

सूरतुल-अ्न्कबूति आयात ४५ से ६९

उत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिनल्किताबि व अक़िमिस्सला-त ط इन्नस्सला-त तन्हा अ़निल् - फ़हृशा-इ वल्मुन्करि ط व ल-जिक्रुल्लाहि अक्बरु ط वल्लाहु यअ्-लमु मा तस्-नअ़ून (४५) व ला तुजादिलू अह्लल्किताबि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु ق इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलैना व उन्ज़ि-ल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदुं व्-व नह्नु लहू मुस्लिमून (४६) व कज़ालि-क अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब ط फ़ल्लज़ी - न आतैनाहुमुल्-किता - ब युअ्मिनू - न बिही ج व मिन् हाउलाइ मंय्युअ्मिनु बिही ط व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लल् - काफ़िरून (४७) व मा कुन्-त तत्लू मिन् क़ब्लिही मिन् किताबिंव्-व ला तखुत्तुहू बियमीनि-क इज़ल्-लर-ताबल्-मुब्तिलून (४८) बल् हु-व आयातुम् - बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न ऊतुल्इ़ल-म ط व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लज़्ज़ालिमून (४९) व क़ालू लौला उन्ज़ि - ल अ़लैहि आयातुम् - मिर्रब्बिही ط क़ुल् इन्नमल् - आयातु अ़िन्दल्लाहि ط व इन्नमा अ-न नज़ीरुम् - मुबीन (५०) अ - व लम् यक-फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब युत्ला अ़लैहिम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-रह्-म-तंव्-व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (५१) क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि बैनी व बैनकुम् शहीदन् ج यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लज़ी - न आमनू बिल्बातिलि व क - फ़रू बिल्लाहि لا उलाइ - क हुमुल्ख़ासिरून (५२) व यस्तअ्-जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि ط व लौला अ-ज-लुम्-मुसम्मल्-लजा-अ-हुमुल्-अ़ज़ाबु ط व ल-यअ्ति-यन्नहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (५३)

العنكبوت ٢٩ — ٣٢١ — اتل مآ اوحي ٢١

اتل مآ اوحي اليك من الكتب واقم الصلوة ان الصلوة
تنهى عن الفحشآء والمنكر ولذكر الله اكبر والله يعلم ما
تصنعون ۝ ولا تجادلوا اهل الكتب الا بالتي هي احسن
الا الذين ظلموا منهم وقولوا امنا بالذي انزل الينا وانزل
اليكم والهنا والهكم واحد ونحن له مسلمون ۝ وكذلك
انزلنا اليك الكتب فالذين اتينهم الكتب يؤمنون به
ومن هؤلآء من يؤمن به وما يجحد بايتنا الا الكفرون ۝
وما كنت تتلوا من قبله من كتب ولا تخطه بيمينك اذا
لارتاب المبطلون ۝ بل هو ايت بينت في صدور الذين
اوتوا العلم وما يجحد بايتنا الا الظلمون ۝ وقالوا لولا
انزل عليه ايت من ربه قل انما الايت عند الله وانما
انا نذير مبين ۝ اولم يكفهم انا انزلنا عليك الكتب يتلى
عليهم ان في ذلك لرحمة وذكرى لقوم يؤمنون ۝
قل كفى بالله بيني وبينكم شهيدا يعلم ما في السموت
والارض والذين امنوا بالباطل وكفروا بالله اولئك هم
الخسرون ۝ ويستعجلونك بالعذاب ولولا اجل مسمى
لجآءهم العذاب وليأتينهم بغتة وهم لا يشعرون ۝

★रु. ५/१ आ ७

(ऐ मुहम्मद !) यह किताब जो तुम्हारी तरफ़ वह्य की गयी है, उस को पढ़ा करो और नमाज़ के पाबन्द रहो। कुछ शक नहीं कि नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है और खुदा का ज़िक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसे जानता है। (४५) और अह्ले किताब से झगड़ा न करो, मगर ऐसे तरीक़े से, कि निहायत अच्छा हो, हां जो उन में से बे-इंसाफ़ी करें, (उन के साथ इसी तरह झगड़ा करो) और कह दो कि जो (किताब) हम पर उतरी और जो (किताबें) तुम पर उतरीं, हम सब पर ईमान रखते हैं और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (४६) और इसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है, तो जिन लोगों को हम ने किताबें दी थीं, वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन (मुश्रिक) लोगों में से भी इस पर ईमान ले आते हैं और हमारी आयतों से वही इन्कार करते हैं जो काफ़िर (शुरू ही से) हैं। (४७) और तुम इस से पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले ज़रूर शक करते। (४८) बल्कि ये रोशन आयतें हैं। जिन लोगों को इल्म दिया गया है, उन के सीनों में (महफ़ूज़) और हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे-इन्साफ़ हैं। (४९) और (काफ़िर) कहते हैं कि इस पर उस के परवरदिगार की तरफ़ से निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुयीं। कह दो कि निशानियां तो खुदा ही के पास हैं और मैं तो खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं। (५०) क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुम पर किताब नाज़िल की जो उन को पढ़ कर सुनायी जाती है। कुछ शक नहीं कि मोमिन लोगों के लिए इस में रहमत और नसीहत है। (५१) ★

कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान खुदा ही गवाह काफ़ी है। जो चीज़ आसमानों में और ज़मीन में है, वह सब को जानता है और जिन लोगों ने बातिल को माना और खुदा से इन्कार किया, वही नुक़्सान उठाने वाले हैं। (५२) और ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। अगर एक वक़्त मुक़र्रर न (हो चुका) होता तो उन पर अज़ाब आ भी गया होता और वह (किसी वक़्त में) उन पर ज़रूर आ कर रहेगा और उन को मालूम भी न होगा। (५३) ये तुम से अज़ाब के

★रु. ५/१ आ ७

www.IslamInHindi.org

सुरः अल-अनकबूत

यस्तअ्-जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि ط व इन्-न ज-हन्न-म लमुही-त-तुम्-बिल्काफ़िरीन ۙ
(५४) यौ-म यग़्शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह़्ति अर्जुलिहिम्
व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ्-मलून (५५) याअ़िबादि-यल्-लज़ी-न आमनू
इन्-न अर्-ज़ी वासि-अ-तुन् फ़इय्या-य फ़अ्-बुदून (५६) कुल्लु नफ़्सिन्
ज़ाइक़तुल्मौति ۖ सुम् - म इलैना
तुर्जअ़ून (५७) वल्लज़ी-न आमनू व
अ़मिलुस्सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्जन्नति
ग़ु-र-फ़न् तज्री मिन् तह़्तिहल् - अन्हारु
ख़ालिदी - न फ़ीहा ط निअ् - म अज्रुल् -
आ़मिलीन ۖ (५८) अल्लज़ी - न
स़-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (५९)
व-क-अय्यिम् - मिन् दाब्बतिल्ला तह़्मिलु
रिज़् - क़हा ۖ अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व
इय्याकुम् ۖ व हुवस्समीअ़ुल् -
अ़लीम (६०) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन्
ख़-ल-क़स्समावाति वल्-अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स
वल्क़-म-र ल - यक़ूलुन्नल्लाहु ج फ़ - अन्ना
युअ्-फ़कून (६१) अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु
लहू ط इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (६२) व ल-इन् स-अल्तहुम्
मन् नज़्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अह़्या बिहिल्अर-ज़ मिम्बअ़्-दि मौतिहा
ल-यक़ूलुन्नल्लाहु ط क़ुलिल्ह़म्दु लिल्लाहि ط बल् अक्सरुहुम् ला यअ़् - क़िलून
★ (६३) व मा हाज़िहिल् - ह़यातुद्दुन्या इल्ला लह - वुं व्-व लअ़िबुन् ط
व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल्-ह़-य-वानु ▨ लौ कानू यअ्-लमून (६४)
फ़इज़ा रकिबू फ़िल्फ़ुल्कि द-अ़ - वुल्ला - ह मुख़्लिसी - न लहुद्दी - न ج
फ़ - लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून ۙ (६५)
लि-यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ۚ व लि-य-त-मत्तअ़ू ۚ फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (६६)

العنكبوت ٢٩ — ٣٢٢ — امن خلق ٢٠

يستعجلونك بالعذاب وإن جهنم لمحيطة بالكفرين ۝
يوم يغشىهم العذاب من فوقهم ومن تحت أرجلهم ويقول
ذوقوا ما كنتم تعملون ۝ يعبادي الذين امنوا إن أرضي
واسعة فإياي فاعبدون ۝ كل نفس ذائقة الموت ثم
إلينا ترجعون ۝ والذين امنوا وعملوا الصلحت لنبوئنهم
من الجنة غرفا تجري من تحتها الأنهر خلدين فيها نعم
أجر العملين ۝ الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ۝ و
كأين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم و
هو السميع العليم ۝ ولئن سألتهم من خلق السموت و
الأرض وسخر الشمس والقمر ليقولن الله فأنى يؤفكون ۝
الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له إن الله
بكل شيء عليم ۝ ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء
فأحيا به الأرض من بعد موتها ليقولن الله قل الحمد لله
بل أكثرهم لا يعقلون ۝ وما هذه الحيوة الدنيا إلا لهو
ولعب وإن الدار الآخرة لهي الحيوان لو كانوا يعلمون ۝
فإذا ركبوا في الفلك دعوا الله مخلصين له الدين فلما نجىهم
إلى البر إذا هم يشركون ۝ ليكفروا بما اتينهم وليتمتعوا

★रु. ६/२ आ १२ ▨ व. लाज़िम

लिए जल्दी कर रहे हैं और दोज़ख़ तो काफ़िरों को घेर लेने वाली है। (५४) जिस दिन अज़ाब उन को उन के ऊपर से नीचे ढांक लेगा और (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि जो काम तुम किया करते थे, (अब) उन का मज़ा चखो। (५५) ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, मेरी ज़मीन फैली हुई है, तो मेरी ही इबादत करो। (५६) हर नफ़्स मौत का मज़ा चखने वाला है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौट कर आओगे। (५७) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्त के ऊंचे-ऊंचे महलों में जगह देंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा उन में रहेंगे। (नेक) अमल करने वालों का (यह) खूब बदला है, (५८) जो सब्र करते और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (५९) और बहुत से जानवर हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। ख़ुदा ही उन को रोज़ी देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (६०) और अगर उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चांद को किस ने (तुम्हारे) हुक्म के ताबेअ किया, तो कह देंगे, ख़ुदा ने, तो फिर ये कहां उल्टे जा रहे हैं ? (६१) ख़ुदा ही अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है, तंग कर देता है। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (६२) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद (किस ने) ज़िंदा किया, तो कह देंगे कि ख़ुदा ने। कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है, लेकिन इन में अक्सर नहीं समझते। (६३) ★

और यह दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और (हमेशा की) ज़िंदगी की (जगह) तो आख़िरत का घर है ▨ काश ये (लोग) समझते ! (६४) फिर जब ये कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ुदा को पुकारते (और) ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं, लेकिन जब वह उन को निजात देकर ख़ुश्की पर पहुंचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते हैं। (६५) ताकि जो हम ने उन को बख़्शा है, उस की ना-शुक्री करें और फ़ायदा उठाएं, (सो ख़ैर,) बहुत जल्द उन को मालूम

★रु. ६/२ आ १२ ▨ व. लाज़िम

www.IslamInHindi.org

सुरः अल-अनकबूत

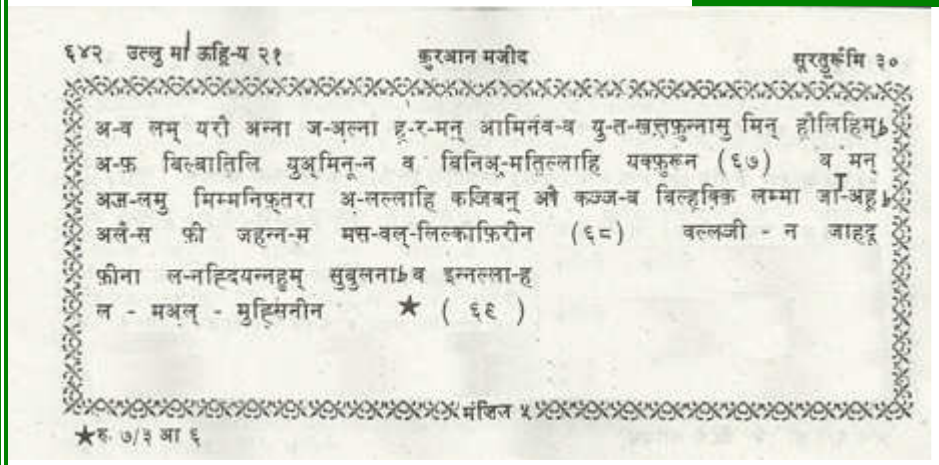

अ-व लम् यरौ अन्ना ज-अ़ल्ना ह़-र-मन् आमिनंव-व यु-त-ख़त्तफ़ुन्नासु मिन् ह़ौलिहिम्,
अ-फ़ बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि यक्फ़ुरून (६७) व मन्
अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा-अहू,
अलै-स फ़ी जहन्न-म मस-वल्-लिल्काफ़िरीन (६८) वल्लज़ी - न जाहदू
फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलना, व इन्नल्ला-ह
ल - मअ़ल् - मुह़्सिनीन ★ (६९)

★रु. ७/२ आ ६